माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय एक पत्रकारिता विश्वविद्यालय के रूप में जाना जाता है, लेकिन यहां कंप्यूटर व आईटी विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। एआई व बदलती तकनीक के बीच परंपरागत पत्रकारिता के समक्ष नई चुनौतियां पैदा हुई हैं। बहुत संभव है आने वाले वर्षों में मीडिया में रोजगार के अवसरों का संकुचन हो या अन्य कारणों से मीडिया शिक्षा का परिदृश्य बदले।

# बदलाव की बयार में संपादन कला की विद्यापीठ

*कवि, लेखक, स्वतंत्रता सेनानी माखनलाल चतुर्वेदी जी ब्रिटिश शासित परतंत्र भारत में सरोकारों की पत्रकारिता के अग्रदूत रहे हैं। आजाद भारत में वे सामाजिक न्याय के लिये मुखर रहे। उन्होंने देश में एक आदर्श पत्रकारिता विद्यापीठ स्थापित करने का सपना देखा था जिसकी स्थापना साल 1990 में उनके ही नाम पर भोपाल में हुई। यहां से पढ़कर निकले छात्रों ने मीडिया संस्थानों में विशिष्ट मुकाम हासिल किए हैं। नई तकनीक मसलन कंप्यूटर, इंटरनेट व अब एआई के आगमन के साथ रचनात्मकता के रूप बदले हैं जिनके संग माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय निरंतर कदमताल कर रहा है।*

*चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं...*
*चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूं,भाग्य पर इठलाऊं।*
*मुझे तोड़ लेना वनमाली*
*उस पथ में देना तुम फेंक।*
*मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने।*
*जिस पथ पर जावें वीर अनेक।*

*- माखनलाल चतुर्वेदी*

**अरुण नैथानी**

उदात्त राष्ट्र प्रेम चित्रित करती बहुचर्चित 'पुष्प की अभिलाषा' कविता देश के जन-जन के मन में गूंजती रही है। इसके रचयिता लब्धप्रतिष्ठित कवि, लेखक, स्वतंत्रता सेनानी माखनलाल चतुर्वेदी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। सरल-सहज और ओज की रचनाओं के रचयिता चतुर्वेदी जी परतंत्र भारत में सरोकारों की पत्रकारिता के अग्रदूत रहे हैं। उन्होंने ब्रिटिश शासित भारत में जहां स्वतंत्रता की भूख जगाकर फिरंगियों के खिलाफ संघर्ष का बिगुल बजाया, वहीं आजाद भारत में सामाजिक न्याय के लिये मुखर रहे। असहयोग आंदोलन के दौरान जेल भी गए। यहां तक कि गांधी जी भी उनकी वाक्शक्ति के कायल थे। उनकी हिंदी के प्रति अगाध श्रद्धा की बानगी देखिए कि जब हिंदी को राष्ट्रभाषा का सम्मान न मिला तो उच्च नागरिक सम्मान पद्मभूषण तक लौटा दिया। पत्रकारिता के शिखर पुरुषों में शामिल चतुर्वेदी जी ने 'प्रभा' व 'कर्मवीर' के तीखे तेवरों वाले समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता की चूलें हिला दी थीं। जिसके लिये उन्हें कई बार ब्रिटिश सत्ता के कोप का भाजन बनना पड़ा।

### जनपक्षधरता की पत्रकारिता

दरअसल, माखनलाल जी स्वतंत्र भारत में बदलते परिवेश के अनुकूल जनसरोकारों व शुचिता की पत्रकारिता के पक्षधर थे। उन्होंने देश में एक आदर्श पत्रकारिता विद्यापीठ स्थापित करने का सपना देखा था। उन्होंने राजस्थान स्थित भरतपुर में 1927 में आयोजित संपादक सम्मेलन में कहा था – 'हिंदी समाचार पत्र कार्यालय में योग्य व्यक्तियों के प्रवेश कराने के लिये, एक पाठशाला, दूसरे शब्दों में कहिए तो कि एक संपादन कला की विद्यापीठ की आवश्यकता है। ऐसी विद्यापीठ किसी योग्य स्थान पर बुद्धिमान, परिश्रमी, अनुभवी, संपादक-शिक्षकों द्वारा संचालित होनी चाहिए। उक्त पीठ में अन्यान्य विषयों का एक प्रकांड ग्रंथ संग्रहालय होना चाहिए।' कालांतर राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा देने वाले मध्यप्रदेश के संपादकों, पत्रकारों व साहित्यकारों ने इस दिशा में सार्थक प्रयास किए। फिर मध्यप्रदेश सरकार ने उनके स्वप्न को साकार करने के लिये, उनके ही नाम पर भोपाल में पत्रकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना की।

### पत्रकारिता के मूल्यों का संवर्धन

उतार-चढ़ाव की यात्रा के बाद आज साढ़े तीन दशक के सफर में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय ने जनसरोकारों की पत्रकारिता को नये आयाम दिए हैं। वर्ष 1990 में एक छोटी सी इमारत से यह बड़ी शुरुआत हुई। आज भोपाल के बिशनखेड़ी में माखनलाल चतुर्वेदी के 'सपनों की संपादन कला की पाठशाला' 50 एकड़ के भव्य परिसर में विस्तृत है। इसे एशिया का पहला पत्रकारिता विश्वविद्यालय होने का गौरव मिला है। विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय स्वीकार्यता का पता इस बात से चलता है कि यहां 20 राज्यों के दो हजार विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। यहां से पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में दीक्षित होकर निकले छात्रों ने देश के तमाम समाचार पत्रों व मीडिया संस्थानों में अलग छाप छोड़ी है। अब चाहे वह रेडियो, टीवी, प्रिंट, डिजिटल, विज्ञापन, सिनेमा और संचार के क्षेत्र हों या फिर प्रतिष्ठित समाचार पत्र, यहां के छात्रों ने अपनी प्रतिभा को दर्शाया है। देश की राजधानी से लेकर तमाम राज्यों में यहां से निकले पत्रकारिता के छात्रों ने विशिष्ट मुकाम हासिल किए हैं। यही वजह है कि पत्रकारिता जगत में प्रतिष्ठित माने जाने वाले रामनाथ गोयनका अवार्ड इस संस्थान से निकले सात छात्रों को मिले हैं। इसके साथ ही अनेक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय व राज्य स्तर के सम्मान भी मिले हैं। बहरहाल, 1990 में रोपा गया पौधा आज धीरे-धीरे वट वृक्ष बनने की ओर अग्रसर है। जनस्वीकार्यता इतनी अधिक कि जिस क्षेत्र में विश्वविद्यालय स्थापित है, उसका नाम ही माखनपुर हो चला है।

### बदलते परिदृश्य पर नजर

यूं तो माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय एक पत्रकारिता विश्वविद्यालय के रूप में जाना जाता है, लेकिन यहां कंप्यूटर व आईटी विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। एआई व बदलती तकनीक के बीच परंपरागत पत्रकारिता के समक्ष नई चुनौतियां पैदा हुई हैं। बहुत संभव है आने वाले वर्षों में मीडिया में रोजगार के अवसरों का संकुचन हो या अन्य कारणों से मीडिया शिक्षा का परिदृश्य बदले। विश्वविद्यालय ने उस चुनौती के लिये खुद को तैयार किया है। विश्वविद्यालय और राज्य के अन्य भागों में स्थित विश्वविद्यालय के तीन परिसरों के कंप्यूटर कोर्स बीसीए , एमसीए व कंप्यूटर से जुड़े डिप्लोमा कोर्स पीजीडीसी, डीसीए व बीसीएम लोकप्रिय हैं। विश्वविद्यालय और खंडवा, दतिया व रीवा परिसरों में हजारों छात्र रोजगार के लिए इन पाठ्यक्रमों को वरीयता दे रहे हैं।

### बदलती तकनीक के साथ कदमताल

वहीं दूसरी ओर विश्वविद्यालय में पत्रकारिता को समृद्ध करने वाली तकनीकी विधाओं को बदलते समय के अनुरूप अपडेट करने के प्रयास लगातार जारी हैं। आईटी अनुसंधान से जुड़े प्रो. मनीष माहेश्वर बताते हैं कि नई तकनीक के साथ लगातार रूप बदलती रचनात्मकता के संग कदमताल करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता रही है। परिसर में न्यू मीडिया से जुड़े समृद्ध संसाधन उपलब्ध हैं। दरअसल, मध्यप्रदेश के कई दिग्गज पत्रकार, जिन्होंने पूरे देश की राष्ट्रीय हिंदी पत्रकारिता में नये आयाम स्थापित किए, उनका सहयोग व मार्गदर्शन इस विश्वविद्यालय को मिला। इसके कई कुलपति व वर्तमान कुलगुरु मीडिया के लंबे अनुभव के बाद इस विश्वविद्यालय से जुड़े। उन्होंने वक्त की नब्ज को पहचाना और पत्रकारिता पाठ्यक्रमों को नई चुनौतियों के अनुरूप ढाला। पत्रकारिता के पाठ्यक्रमों को वक्त की जरूरत के मुताबिक लगातार समृद्ध व अपडेट किया जाता रहा है।

'कर्मवीर' व 'प्रभा' का संपादन करने वाले, कई कालजयी कृतियां रचने वाले और पहले साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित होने वाले हिंदी पत्रकारिता के पितृपुरुष माखन लाल चतुर्वेदी का नाम हिंदी पत्रकारिता में सम्मान के साथ लिया जाता है। उनके नाम पर स्थापित विश्वविद्यालय उनकी आदर्श पत्रकारिता की कसौटी पर खरा उतरने की कोशिश में है।

दैनिक ट्रिब्यून के पूर्व संपादक स्व. राधेश्याम शर्मा माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय,भोपाल के प्रथम डायरेक्टर जनरल और पहले कुलपति रहे हैं।

## स्मृतियों के झरोखे से समृद्धि

**पुस्तकालय** की समृद्ध परंपरा को विस्तार देने के लिये कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने अपने निजी पुस्तकालय की पुस्तकें नालंदा पुस्तकालय को भेंट की हैं। जिनमें दैनिक ट्रिब्यून के संपादक रहे स्व. राधेश्याम शर्मा, पूर्व कुलपति के जी सुरेश, आई.आई.एम.सी के एम.के दुआ, प्रो. सरदाना, साहित्यकार देवेंद्र दीपक, सिने पत्रकार ब्रजभूषण चतुर्वेदी आदि शामिल हैं। पुस्तकालय के इस खंड में उनकी महत्वपूर्ण पुस्तकों के साथ पुस्तकें दान करने वाले महानुभावों के चित्र भी लगे हैं। सोच यही है कि उनके द्वारा संगृहीत महत्वपूर्ण पुस्तकें सुरक्षित रहें और आने वाली पीढ़ियों को उनका लाभ मिलता रहे।

## नालंदा पुस्तकालय पत्रकारिता की समृद्ध विरासत का संरक्षण

**माखनलाल** चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय की एक खासियत इसका आधुनिक व समृद्ध पुस्तकालय है। जैसा कि चतुर्वेदी जी ने कहा था- 'पत्रकारिता की पीठ में अन्यान्य विषयों का एक प्रकांड ग्रंथ संग्रहालय होना चाहिए।' विश्वविद्यालय के संचालकों ने उनकी बात के मर्म को समझते हुए नालंदा पुस्तकालय को आकार दिया है। पुस्तकालय की संचालिका डॉ.भारती सारंग बताती हैं कि इस पुस्तकालय में 43000 पुस्तकें संगृहीत हैं। मीडिया के विभिन्न प्रभागों, विज्ञापन, जनसंपर्क व पत्रकारिता से जुड़ी तमाम महत्वपूर्ण पुस्तकें, पुराने समाचार पत्र, सामान्य ज्ञान की पुस्तकें, संदर्भ सामग्री, भाषायी जर्नल यहां उपलब्ध हैं। चालीस अखबारों के पांच साल के पिछले रिकॉर्ड छात्रों व शोधार्थियों के लिए उपलब्ध रहते हैं। यही वजह है कि देशभर के पत्रकारिता व संचार से जुड़े विषयों के शोधार्थी यहां सुविधाओं का लाभ उठाते हैं। कंप्यूटर संचालित और डिजिटल तकनीक से समृद्ध पुस्तकालय की सभी गतिविधियां कैमरे की निगरानी में रहती हैं ताकि दुर्लभ पत्र-पत्रिकाओं का संरक्षण किया जा सके। पुस्तकालय में पचास मैग्जीन व रिसर्च जर्नल नियमित आते हैं और उसमें विश्वविद्यालय की पत्रिकाएं मीडिया मीमांसा, विकल्प आदि भी शामिल हैं। पत्रकारिता के छात्रों को प्राच्य विद्याओं का ज्ञान उपलब्ध कराने के लिये पुस्तकालय के देवर्षि नारद खंड में पौराणिक पुस्तकों का संग्रह है। मकसद है कि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत प्राचीन भारतीय ज्ञान से जुड़े विषयों पर पर्याप्त जानकारी पत्रकारिता के छात्रों को मिल सके। देश की आजादी की लड़ाई में जन-चेतना जगाने के लिये पत्र-पत्रिकाओं ने निर्णायक भूमिका निभायी थी। पुस्तकालय में परतंत्र भारत के दौर के दुर्लभ समाचार पत्र और स्वतंत्रता आंदोलन व सामाजिक परिवर्तनों की साक्षी पत्रिकाओं का समृद्ध संकलन यहां मौजूद है। माखनलाल चतुर्वेदी जी द्वारा संपादित 'कर्मवीर' के 1920 से लेकर 1965 तक के महत्वपूर्ण अंक यहां संरक्षित हैं। उनकी तमाम पुस्तकें भी पुस्तकालय की धरोहर हैं। इसके अलावा पुस्तकालय में पत्रकारिता से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों में की गई पीएचडी की थीसिस और लघु शोधग्रंथ यहां संगृहीत हैं। वहीं खास प्रावधान किए गए हैं ताकि दुर्घटनावश लगने वाली आग से इन्हें संरक्षित रखा जा सके। साथ ही प्राचीन ग्रंथों व समाचार पत्रों को संरक्षित करने के लिये नियमित कैमिकल ट्रीटमेंट किया जाता है।

*माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी से बातचीत*

## 360 डिग्री पर दुनिया को देखने की शक्तिशाली खिड़की

**आप ढाई दशक लंबी पत्रकारिता के अनुभव के बाद विश्वविद्यालय के कुलगुरु का दायित्व निभा रहे हैं, आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं?**

मेरी प्राथमिकता अंतिम वर्ष के उन विद्यार्थियों पर विशेष रूप से है, जो आने वाले कुछ ही महीनों बाद देश के मीडिया संस्थानों की सेवाओं में उतरने वाले हैं। किसी अखबार, टीवी चैनल या रेडियो में। मैं स्वयं 25 साल तक लगातार मीडिया में ही रहा हूं और अधिक समय रिपोर्टिंग में। मैंने स्पेशल रिपोर्टिंग के लिए पांच साल तक लगातार आठ बार भारत घूमा है। कुछ किताबें हैं। मैं चाहूंगा कि फील्ड की चुनौतियों पर अपने विद्यार्थियों से बात करूं। उन्हें अपने अनुभवों से लाभान्वित करूं। इसलिए अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों की एक संयुक्त साप्ताहिक क्लास में मैं उनके बीच नियमित रहने के लिये प्रतिबद्ध हूं। ताकि हम अपने अनुभवों को बांटें और शिक्षा केवल एकतरफा न हो। हमें यह भी पता होना चाहिए कि किसकी रुचि किस विषय में है और वहां वह क्या नया कर सकता है। साथ ही हमें उसकी तैयारी करनी है।

**साल 1990 में रोपे गए एक पौधे के एक वृक्ष के रूप में आकार लेने को किस तरह देखते हैं?**

विश्वविद्यालय ने साढ़े तीन दशक की यात्रा में कई पड़ाव देखें हैं। साल 1990 में एक छोटी सी इमारत से 50 एकड़ के भव्य परिसर तक की यह यात्रा उतार-चढ़ावों से भरी रही है। इसकी सफलता की बानगी बीस राज्यों के दो हजार विद्यार्थी हैं। इन तीन दशकों में यहां से निकले विद्यार्थी देश के हर मीडिया संस्थान, रेडियो, टीवी, प्रिंट, डिजिटल, विज्ञापन, सिनेमा और संचार के प्रत्येक माध्यम में डटे हुए हैं। हमारे सात पूर्व छात्रों को रामनाथ गोयनका अवार्ड मिले हैं। दो को दो-दो बार मिले हैं। मैं स्वयं इसी विश्वविद्यालय के दूसरे बैच का विद्यार्थी हूं। नए परिसर में बहुत कुछ नया करने की गुंजाइश है।

**इस दौरान आप क्या कुछ नया कर रहे हैं?**

नए सत्र में हम सौ साल की पत्रकारिता के कुछ यादगार फ्रंट पेजों की एक गैलरी सजा रहे हैं। सौ साल में भारत में घटी महत्वपूर्ण घटनाएं तब के अखबारों में कैसे कवर हुईं। देश भर से हमने ये महत्वपूर्ण दस्तावेज जुटाए हैं। इनमें भारत में पत्रकारिता के विकास की यात्रा भी दिखाई देगी और सरदार भगतसिंह की फांसी से लेकर स्वाधीन भारत में आपातकाल, पंजाब और कश्मीर में आतंक के विस्तार की कहानी भी। डाइंग आर्ट मान ली गई कार्टून की विधा को लेकर भी विश्वविद्यालय में आने वाले समय में एक कार्टून गैलरी दिखाई देगी। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण हम एक मीडिया लैब बनाने जा रहे हैं, जहां अलग-अलग विभागों के विद्यार्थी मीडिया के विभिन्न माध्यमों की ट्रेनिंग पेशेवर विशेषज्ञों से लेंगे। हमारी कोशिश होगी कि यह एक प्रोडक्शन हाउस की तरह स्थापित हो, जहां उच्च कोटि का कंटेंट तैयार हो।

**आप प्रशिक्षु छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान से समृद्ध करने की दिशा में क्या कर रहे हैं?**

-हमारे कई विभागों के अपने महत्वपूर्ण प्रकाशन हैं। जैसे-विकल्प, पहल, द फैक्ट फाइंडर, मीडिया मीमांसा। ये प्रिंट के प्रयोग हैं। कम्युनिटी रेडियो 'कर्मवीर' एक लोकप्रिय चैनल है। एमसीयू दर्शन नाम से वीडियो पत्रिका बनाते हैं। तीनों माध्यमों को हम एक प्लेटफॉर्म पर लाने का प्रयास कर रहे हैं। एक समृद्ध न्यूजरूम जहां विद्यार्थी महसूस करें कि वे किसी अखबार या टीवी के न्यूजरूम में ही हैं।

**पत्रकारिता के बदलते स्वरूप को आप कैसे देखते हैं?**

- दरअसल,पैंतीस साल पहले केवल प्रिंट मीडिया था। फिर टीवी चैनल आए। नेशनल, रीजनल, लोकल, स्पोर्ट्स, बिजनेस आदि अनगिनत चैनल आए। अब डिजिटल मीडिया की अपनी ताकत है। विश्वविद्यालय ने मीडिया के हर बदलते दौर के साथ स्वयं को हमकदम बनाए रखा है। अपने कोर्स और प्रैक्टिकल ट्रेनिंग- दोनों स्तरों पर हर माध्यम में हम कदमताल करते रहे हैं। अब इन से भी आगे आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, डीपफेक और साइबर सिक्योरिटी जैसे नए आयाम मीडिया में जुड़ रहे हैं। इसलिए हर महीने इन विषय विशेज्ञता वाले क्षेत्रों पर केंद्रित विशेष वर्कशॉप्स की योजना है, जिनमें देश भर के विशेषज्ञों को बुलाएंगे और विद्यार्थियों को इनकी हर संभव व्यावहारिक ट्रेनिंग सुनिश्चित की जाएगी।

**आप आने वाले समय की चुनौती को किस तरह देखते हैं?**

-मैं कहता हूं कि अगले बीस साल हम सबके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। वर्ष 2047 में जब देश अपनी स्वाधीनता के सौ साल मनाएगा। ऐसे में मीडिया से निकले विद्यार्थी इन बीस वर्षों में बहुत खास भूमिका निभाने वाले हैं। वे अपना कैरिअर भी बनाएंगे और मीडिया को अपना योगदान भी देंगे। नए सत्र में हमारा घोष है-'एक विश्वविद्यालय, एक विश्व।' विश्वविद्यालय एक ऐसी जगह है जहां हम एक बेहतर विश्व के निर्माण के लिए तैयार होते हैं। मीडिया में काम करते हुए केवल राष्ट्रहित हमारा ध्येय होना चाहिए। हम राष्ट्र से निरपेक्ष नहीं हो सकते। हमारा हर काम- एडिटिंग या रिपोर्टिंग, एंकरिंग या प्रोडक्शन, क्रिएटिव राइटिंग या आइडिएशन, हरेक काम में हमें अपने देश के हित को केंद्र में रखकर सोचना होगा।

**पत्रकारिता के विभिन्न माध्यमों में दाखिला लेने वाले छात्रों से खास क्या कहना चाहेंगे?**

-एक बात और जो मैं अक्सर मीडिया के विद्यार्थियों से कहता हूं, वो ये कि मीडिया में केवल डिग्री नहीं है। यह 360 डिग्री पर दुनिया को देखने की एक शक्तिशाली खिड़की है। यह अवसर जॉब के किसी दूसरे स्थान पर कहीं नहीं मिलेगा। यह बौद्धिक सृजन का अपार ऊर्जा से भरा हुआ क्षेत्र है। इसलिए यहां पढ़ने के लिए कुछ बड़ा सोचकर आएं, केवल एक नौकरी ही लक्ष्य न हो। बेशक मीडिया में शुरुआती कुछ साल कठिन संघर्ष के होंगे, लेकिन उसके बाद जीवन के विस्तार में एक खुला आसमान भी मिलेगा, जहां आप ऊंची उड़ानें भरेंगे। कुछ भी करें लेकिन भारत के प्रति प्रेम से भरे रहें। एक हजार सालों की यातनादायी गुलामी से निकला भारत हमसे बहुत कुछ अपेक्षा करता है।

**विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम और व्यावहारिक पत्रकारिता के बीच एक बड़ा अंतर नजर आता है, क्या कहेंगे?**

मैं मीडिया से आया हूं और मेरा अनुभव है कि मीडिया के न्यूजरूम और मीडिया के क्लासरूम के बीच एक दूरी है। क्लासरूम टीचिंग एक टापू पर है और न्यूजरूम की आपाधापी दूसरे टापू पर। दोनों के बीच बड़ा गैप है। मेरी कोशिश है कि यह दूरी नहीं होनी चाहिए। इसलिए तय किया गया है कि हमारे सभी विभागों के प्रोफेसर्स मध्यप्रदेश के सभी न्यूजरूम का भ्रमण करें। संपादकों और रिपोर्टरों से मिलें। यह देखें कि वहां क्या चल रहा है? हमारे स्तर पर हम पत्रकारिता के व्यावहारिक पक्ष को और मजबूत कैसे कर सकते हैं? हमें हमारी कमियां कौन बताएगा? न्यूजरूम में जाकर ही टीचिंग सिस्टम की खामियां समझ में आ सकती हैं।

https://www.dainiktribuneonline.com/news/features/a-powerful-window-to-view-the-world-at-360-degrees/

https://share.google/K0x5ZzlaVbKWYBI3H